CHETANA
International Journal of Education
(CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

आलेख

Received 20.01.2023 Reviewed 28.01.2023 Accepted 10.03.2023

# झुंझुनू में पर्यटन

* डॉ. सज्जन सिंह

## झुंझुनू की वर्तमान स्थिति

शेखावाटी क्षेत्र में मूलरूप से सीकर व झुंझुनू जिलों को शामिल किया जाता है। सीकर जिले को शेखावाटी का प्रवेश द्वार या हृदय स्थल के नाम से भी जाना जाता है। जिले को शिक्षा नगरी के रूप में भी प्रसिद्धि हासिल है। इस जिले के उतर में झुंझुनू, उत्तर-पश्चिम में चुरू, दक्षिण-पश्चिम में नागौर व दक्षिण-पूर्व दिशा में जयपुर जिला सीमा बनाता है। जिले को वीरभान ने बसाया था इसलिए सीकर का पुराना नाम 'वीरभान का बास' था। राजा माधोसिंह ने इसको वर्तमान स्वरूप प्रदान कर सीकर नाम रखा था।[1]

झुंझुनू जिला सीकर जिले के उतर दिशा  में अवस्थित है। इस शहर को जुझार सिंह नेहरा के नाम पर शासक शार्दुलसिंह शेखावत द्वारा सन् 1730 में बसाया गया था। जुझार सिंह शार्दुलसिंह शेखावत के सेना प्रमुख थे। भारत की आन राजस्थान की शान व शेखावाटी का सिरमौर के रूप में झुंझुनू जिले को जाना जाता है। अरावली पर्वतमाला से परिवेष्ठित इसके दक्षिण-पूर्वी भाग को प्रकृति ने सजलतापूर्वक झरनों के प्रवाह और फल-फूलों की संघनता से श्रृंगारित किया है तो कुदरत ने इसके उतरी-पश्चिमी भाग को स्वर्णिम रेत के धोरों की सौगात प्रदान की है। झुंझुनू जिले में उत्तराखण्ड जैसी सजलता और पर्वतीय हरियाली का वैभव है तो यहां पुरानी हवेलियों में कला, संस्कृति, साहित्य और नाना प्रकार की जीवन शैली को प्रतिबिम्बत करने वाले इन्द्रधनुषी भिति-चित्रों की नयन प्रिय झांकी भी अंकित है। यहां के भव्य राजप्रसादों के दर-आर-दीवार जहां इतिहास के उतार-चढ़ाव की गाथाओं का बखान करते प्रतीत होते हैं वहीं कलात्मक मीनारों वाले कुओं, आकर्षक छतरियों, विशाल काय बावड़ियों, नयनाभिराम जोहड़ों व तालाबों तथा ऐतिहासिक किलों और स्मारकों में छुपा यहाँ का गौरवशाली अतीत स्वयं अपने आप में एक अविस्मरणीय दस्तावेज के समान परिलक्षित होता है।[2] धार्मिक और साम्प्रदायिक सद्भाव से अनुप्रमाणित, नयनप्रिय पर्यटकीय वैभव से अलंकृत, देश¬ प्रेम और समाज सुधार की अनुकरणीय परम्पराओं से पल्लवित, समृद्धशाली लोक संस्कृति से विभूषित श्रम और स्वाभिमान भरे व्यक्तित्व से अंगीकृत तथा शिक्षा विकास और प्रगतिषीलता से

[1] शार्दुल सिंह शेखावत, सीकर का इतिहास, पृ. 9

[2] जिला दर्शन, जिला प्रशासन  तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ. 3-4 वर्ष-2017

आहलादित झुंझुनू जिले का गौरव एक सम्पूर्ण और समग्र परिवेश का परिचायक है। इस माटी के कण-कण में शौर्य, संघर्ष स्वाभिमान और समरसता की सुगंध विद्यमान है।[3]

इस जिले को भारतीय सेनाओं में सर्वाधिक सैनिक भागीदारी का गौरव प्राप्त है। इस धरती के लाडलों ने मातृभूमि की रक्षार्थ बलिदान और बहादुरी के कीर्तिमान स्थापित किये हैं तथा 1948 में जम्मू-कश्मीर की रक्षा से लेकर गत कारगिल संघर्ष तक प्रत्येक युद्ध और रक्षा ऑपरेशन में अपनी वीरता और शहादत के अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। इसी माटी में जन्में और पले धनपतियों ने राष्ट्र के औद्योगिक और आर्थिक विकास में जहां नित नये आयाम स्थापित किये हैं वहीं विषम परिस्थितियों में यहां के मेहनतकश किसानों ने भी अपने श्रम साध्य जीवन की मिसाल कायम की है।[4]

वर्तमान में झुंझुनू जिला राजस्थान राज्य के उतर-पूर्वी भाग में स्थित है। जिसका क्षेत्रफल 5929 वर्ग किलोमीटर है। राज्य में यह जिला 270.38‘ से 280.31‘ उतरी अक्षांश तक व 750.02‘ से 760.06‘ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है।[5] जिला राजस्थान की राजधानी जयपुर से उतरी-पूर्वी दिशा में 185 किलोमीटर तथा देश की राजधानी दिल्ली से 260 किलोमीटर उतर-पश्चिम दिशा में स्थित हैं। राजस्थान के जनपद का प्रमुख स्थल झुंझुनू पर्यटन की दृष्टि से समृद्ध शहर है। जिले से पश्चिम में बीकानेर, जोधपुर पूर्व में अलवर, धौलपुर, भरतपुर जबकि हरियाणा राज्य के रेवाड़ी, नारनौल भी जुड़े हैं तो चुरू, सीकर सबसे नजदीक जिला मुख्यालय से जुड़ा है।[6]

**पर्यटन स्थल**

**लोहार्गल**

झुंझुनू जिले के दक्षिण में मुख्यालय से लगभग 60 किलोमीटर दूर अरावली पर्वत श्रृंखला में स्थित यह पवित्र स्थान सीकर-नीमकाथाना मार्ग पर सीकर से लगभग 35 किलोमीटर दूर है। इस मार्ग पर स्थित गोल्याणा बस स्टेण्ड से 5 किलोमीटर का पृथक रास्ता दक्षिण दिशा  में स्थित लोहार्गल के लिए जाता है। प्रशासनिक दृष्टि से यह नवलगढ़ पंचायत समिति का एक ग्राम पंचायत मुख्यालय है। यहां पर लगभग 70 मन्दिर मालकेतु व बरखण्डी शिखर, सूर्य कुण्ड आदि के साथ-साथ यहां का अनुपम सौन्दर्य दर्शनीय है। भाद्र पद माह में कृष्ण जन्माष्टमी से अमावस्या तक हर

---

[3] जयनारायण सोनी, हर्षनाथ, पृ. भूमिका, देवकीनन्दन खेड़वाल, फतहपुर शेखावाटी का ऐतिहासिक दिग्दर्शन, पृ. 2-3

[4] जिला दर्शन, जिला प्रशासन  तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ. 6-7 वर्ष-2017

[5] हरिमोहन सक्सेना, राजस्थान का भूगोल, पृ. 7, रतनलाल मिश्र, कायमखानी वंश का इतिहास पृ.5

[6] रघुनाथ सिंह शेखावत, शेखावाटी प्रदेश  का राजनीतिक इतिहास आदि से आजादी तक, पृ. 2, मोहनलाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ. 2 महबूब अलीखा एलमाण, क्यामखानियों का शोधपूर्ण इतिहास, पृ. 1, रतनलाल मिश्र, शेखावाटी का नवीन इतिहास, पृ. 2,तारादत्त, गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की, पृ. 1

वर्ष लोहार्गल के पहाड़ों से हजारों नर-नारी पद परिक्रमा करते हैं व अमावस्या के रोज सूर्य कुण्ड में पवित्र स्नान के साथ यह चैबीस कोसिय परिक्रमा विधिवत सम्पन्न होती है।[7]

**किरोड़ी**

जिला मुख्यालय से यह स्थान भी लगभग 60 किलामीटर दूर है। अरावली पर्वतमाला की गोद में बसा किरोड़ी एक ऐसा रमणीक स्थल है जिसे प्रकृति ने वनस्पति और सौन्दर्य सम्पदा से मालामाल कर रखा है। यहां पर आम, नीबू, जामुन और बीलपत्र के वृक्षों की बहुतायात है। यहां पर केवड़े के दुर्लभ वृक्ष भी किरोड़ी में पाए जाते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से यहां उदयपुरवाटी के दानवीर शासक टोडरमल व उनके वितमंत्री मुनशाह के स्मारक हैं। एक तरफ राधा-कृष्ण का मन्दिर है तो दूसरी तरफ पीर बाबा की दरगाह भी हैं। शीतल व निर्मल जल के यहां पर तीन कुण्ड हैं। जिनमें गन्धक का मिश्रण बताया जाता है।[8]

**मनसामाता मन्दिर**

हिन्दू धर्म में अनेक देवी-देवताओं को पूजा जाता है। जिनमें एक मनसामाता है। देवी मनसा को भगवान शंकर की पुत्री के रूप में जाना जाता है। उदयपुरवाटी तहसील मुख्यालय से लगभग 25 किलोमीटर दूर खोह-गुड़ा ग्राम के समीप अरावली पर्वत माला के शिखर पर मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर जीवन के तामझाम व कौलाहल से दूर प्रकृति मां की गोद में गगन चुम्बी पर्वत श्रृंखलाओं पर विराजमान है।[9]

**नरहड़ दरगाह**

झुंझुनू जिला मुख्यालय से 40 किलोमीटर दूर जयपुर-पिलानी सड़क मार्ग पर चिड़ावा से आठ किलोमीटर आगे पिलानी की ओर देवरोड़ गांव है जहां से 3 किलोमीटर एक पृथक मार्ग नरहड़ दरगाह के लिए जाता है। यह स्थान केवल शेखावाटी व राजस्थान का ही नहीं वरन् भारत वर्ष का गौरवशाली स्थान है। यहां पर हर वर्ष कृष्ण जन्माष्टमी पर शक्कर पीर बाबा का मेला भरता है। इस तरह की मिशाल अन्यत्र देखने को नहीं मिलती है। नरहड़ में शक्कर-पीर बाबा की ऐतिहासिक दरगाह है। जहां पर हिन्दू और मुस्लिम दोनों ही श्रृद्धा के साथ आते हैं। विशाल व भव्य बुलन्द दरवाजे से होकर दरगाह शरीफ तक पहुँचा जाता है। जहां एक आयताकार चैक में मानसिक विकृति वाले लोगों के शरीर पर पवित्र मिट्टी(चंदल) रगड़ी जाती है। यह ग्राम चिड़ावा पंचायत समिति का ग्राम पंचायत मुख्यालय हैं। यहां पर यात्रियों के लिए धर्मशाला व तिबारे बने हुए हैं।[10]

---

[7] मुरारीलाल शर्मा, लोहार्गल परिक्रमा, पृ. 6-7, बाघसिंह नेवरी, शेखावत गोरधन सिंह, उदयपुरवाटी अतीत से वर्तमान तक, पृ. 142

[8] तारादत्त, गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की, पृ. 4

[9] बाघसिंह नेवरी, गोरधन सिंह शेखावत, उदयपुरवाटी अतीत से वर्तमान तक, पृ. 129

[10] तारादत्त, गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की, पृ. 41,42,43

**रानी सती**

देश में रानी सतियों के मन्दिर अन्यत्र भी स्थित हैं, किन्तु ऐसा विशाल मन्दिर राजस्थान के झुंझुनू शहर में ही है। यह मन्दिर शहर के बीचों बीच स्थित है। यह शहर का एक प्रमुख दर्शनीय मन्दिर है। बाहर से देखने पर यह मन्दिर किसी राजमहल से कम नहीं दिखाई देता है। यह पूरा मन्दिर संगमरमर से निर्मित है। बाहरी दिवारों पर शानदार रंगीन चित्रकारी की गई हैं। रानी सती को समर्पित यह मन्दिर 400 वर्ष पुराना है। यह मन्दिर समान समता और स्त्री शक्ति का प्रतीक है। रानी सती का मेला प्रतिवर्ष भाद्रपद की अमावस्या का आयोजित किया जाता है। मन्दिर के परिसर में ओर मन्दिर भी स्थित हैं जिमें मुख्य रूप से शिवजी, गणेशजी, माता सीता, और रामजी के परम् भक्त हनुमानजी के मन्दिर स्थित हैं मन्दिर परिसर में षोड़ष माता का सुन्दर मन्दिर है। जिसमें 16 देवियों की मूर्तियां लगी है। मन्दिर के गर्भ गृह में नेकर व बरमुड़ा पहने लोगों का प्रवेश वर्जित है। मन्दिर में श्रृंद्धालुओं के लिए विशाल आवास बने हुए हैं। इसके अलावा मन्दिर परिसर में बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं माटेन्सरी स्कूल, रानी सती छात्रावास, पुस्तकालय, बैंक, डाकघर, होमोपैथिक औषधालय और दुकानों तथा विद्युत व पेयजल की सुविधा है।

**खेमी सती मन्दिर**

झुंझुनू जिले में खेमी सती का ऐतिहासिक मन्दिर स्थित है। यह अपनी खूबसूरती व वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।[11]

**सुनारी सभ्यता**

यह झुंझुनू जिले में खेतड़ी तहसील स्थित एक प्राचीन सभ्यता है। जिसका उत्खनन राज्य सरकार द्वारा 1980-81 में किया गया था। यह कांतली नदी के किनारे स्थित है। यहां से लोहे गलाने की प्राचीनतम भट्टीया मातृदेवी की मृणमूर्तिया, धान संग्रह का कोठा प्राप्त हुआ है। वहीं मौर्यकालीन काली पालिश युक्त मृदभाण्ड भी मिले हैं। यहां पर कुषाण व शुंग कालीन अवशेष भी प्राप्त हुए हैं। यहां के निवासी भोजन में चावल का प्रयोग करते थे।[12]

**पिलानी**

तकनीकी शिक्षा का राष्ट्रीय सिरमौर पिलानी न केवल झुंझुनू का अपितु पूरे देश का गौरव स्थल है। देश के विभिन्न राज्यों से विद्याध्ययन के लिए आने वाले छात्र-छात्राओं ने पिलानी में विद्या विहार परिसर को लघु भारत का स्वरूप दे दिया है। पिलानी में भारत सरकार का एक उपक्रम केन्द्रीय इलेक्ट्रोनिकी अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (सीरी) भी है जो देश के विज्ञान और तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है।

---

[11] विजय वर्मा, मन्दिर शिल्पः स्थापत्य एवं कला, राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, पृ. 61,मोहन लाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ. 236, तारादत्त, गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की, पृ.33,34

[12] जिला दर्शन, जिला प्रशासन तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ. 18 वर्ष-2019

**टीबा बसई**

खेतड़ी के निकट हरियाणा राज्य की सीमा पर जिले का टीबा बसई गाँव है जहां बाबा रामेश्वर दास का मन्दिर दर्शनीय है। इस मन्दिर में अति विशाल मूर्तियां, दिवारों पर अंकित गीता व अन्य धर्म ग्रथों के पवित्र श्लोक और मन्दिर के विशाल परिसर की भव्यता एक अपूर्व झांकी के समान है।[13]

**खेतड़ी**

महमूद गजनवी के 17 आक्रमणों में से एक आक्रमण खेतड़ी पर भी हुआ था। यह शेखावाटी का सबसे बड़ा ठिकाना खेतड़ी भारत की ताम्र नगरी के नाम जाना जाता है।[14] झुंझुनू से 70 तथा दिल्ली से 160 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह स्थान दिल्ली, जयपुर और झुंझुनू से सड़क मार्ग से जुड़ा हुआ है। यहां पर अरावली के गर्भ से करीब 75 किलोमीटर लम्बी ताम्र पट्टी के ऊपर छोर पर खेतड़ी स्थित है जहां देश का एकमात्र ताम्बा उत्पादक संस्थान हिन्दुस्तान काॅपर लिमिटेड स्थित है।[15] प्राचीन खेतड़ी ठिकाने व वर्तमान खेतड़ी नगर के मध्य करीब 8 किलोमीटर की दूरी है। खेतड़ी नगर से ताम्र उपक्रम के कारण देश के कोने-कोने से आये खनन कार्मिकों का निवास स्थान हैं वहीं पुराना खेतड़ी कस्बा अपनी ऐतिहासिक पहचान के कारण दर्शनीय स्थल है। खेतड़ी का सम्बन्ध रामकृष्ण मिशन का मठ, भोपालगढ़ का दुर्ग, पन्नालाल शाह का तालाब, अजीत सागर, बागोर का किला, भटियानीजी का मन्दिर आदि दर्शनीय स्थल है। महान् युगदृष्टा स्वामी विवेकानंद का खेतड़ी से गहरा सम्बन्ध था। शिकागो में हुए धर्म सम्मेलन में भाग लेने से समय खेतड़ी के महाराजा अजीतसिंह ने उनकी आर्थिक मदद की थी। खेतड़ी घराने के साथ स्वामीजी के पारिवारिक सम्बन्ध बन गए थे। उनको विवेकानंद नाम खेतड़ी के महाराजा अजीतसिंह की देन थी। वे अपने जीवनकाल में 3 बार खेतड़ी प्रवास पर आये थे।[16]

**शिमला ग्राम**

झुंझुनू जिले में स्थित शिमला गांव का सम्बन्ध लोक कल्याणकारी शासक के विख्यात हुए शेरशाह सूरी से रहा है। शेरशाह सूरी ने इस ग्राम मे सैकड़ों कुएं खुदवाए जिनके अवशेष आज भी यंत्र-तंत्र मिलते हैं।[17]

---

[13] जिला दर्शन, जिला प्रशासन तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ. 9 वर्ष-2017

[14] रतनलाल मिश्र, शेखावाटी का नवीन इतिहास, पृ. 8

[15] हरिमोहन सक्सेना, राजस्थान का भूगोल, पृ. 10

[16] मोहनलाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ. 237

[17] जिला दर्शन, जिला प्रशासन तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ. 9 वर्ष-2018

**शौर्य पार्क**

जिले वासियों का गर्व स्थल व आस्था का प्रतीक शौर्य पार्क पीरूसिंह सर्किल के उतर दिशा में कुछ ही दूरी पर स्थित है। जिस पर जिले के शहीदों के नाम अंकित हैं। जिनकी संख्या प्रथम विश्व युद्ध से लेकर वर्तमान समय तक 450 से अधिक है। इनमें कारगिल युद्ध मे शहीद सैनिकों के नाम भी अंकित हैं।[18]

**महनसर दुर्ग**

शार्दुल सिंह की मृत्यु के बाद उसके पांच पुत्रों ने राज्य को बराबर बांट लिया जो पंचपाना कहलाया था। उसके पुत्र नवलसिंह ने नवलगढ़ दुर्ग बनाया तथा दूसरे पुत्र नाहरसिंह ने 1768 ई. में महनसर का दुर्ग बनवाया।[19] दुर्ग में स्थित एक कुआ कोठी के नाम से प्रसिद्ध है जिसे माजी साहिबा का कुआं भी कहते हैं। इसका निर्माण राजमाता ने करवाया था। शेखावाटी के कुओं की प्रमुख विशेषता ऊँची मीनारें हैं।[20]

**कमरूद्दीन शाह की दरगाह**

राजस्थान में शेखावाटी प्रदेश झुन्झुनू में झुंझुनूं जिले से पश्चिम दिशा की तरफ लगभग 25 बीघा में क्यामखानी वशं के प्रसिद्ध दरवेश हजरत कमरूद्दीन शाह की दरगाह स्थित है। जो लगभग 125 वर्ष पुरानी मानी जाती है। दरगाह के सामने की तरफ एक बड़ी चट्टान, एक तालाब तथा एक कुआ है जो कि शहर का सबसे पुराना कुआ माना जाता है। दरगाह के भीतर गद्दीनशील हादीशाह की दरगाह व उनके तीन शिष्यों के मजार शरीफ हैं तथा सामने की तरफ महफिलखाना बना है।[21]

**बिड़ला तकनीकी संग्रहालय**

इस संग्रहालय की स्थापना ई. 1954 में की गई थी। जिसके लिए ई. 1964 में एक भव्य ईमारत बनाई गई तथा इस ईमारत में ई. 1970 को केन्द्रिय संग्रहालय के रूप में स्थानान्तरित किया गया था। यह संग्रहालय लगभग 50 हजार वर्ग फुट पर फैला हुआ है।[22]

**झुंझुनू का हवामहल**

झुंझुनू के नौ महलों के क्षेत्र में खेतड़ी में स्थित महल अपनी प्राचीनता व आकर्षकता के लिए जाना जाता है। इस महल में पांच मंजिल और तीन तरफा महल की सात मंजिले कटोरेनुमा बुर्ज हैं।[23]

---

[18] व्यक्तिगत सर्वे, दिनांक 26.07.2018

[19] रघुनाथ सिंह शेखावत, झुंझुनू मण्डल का इतिहास, पृ. 143

[20] राजकुमार पारीक, शेखावाटी के परम्परागत स्रोत, कुएं, बावड़ी और जोहड़, पृ. 137, मोहनलाल गुप्ता, जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ. 239

[21] तारादत्त, गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की, पृ. 46, व्यक्तिगत सर्वे, दिनांक 18.03.2019

[22] जिला दर्शन, जिला प्रशासन तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ. 19 वर्ष-2020

**झुंझुनू जिले की प्रमुख हवेलियां**

वीरों की भूमि राजस्थान अपने किले और महलों के लिए विश्वभर में जाना जाता है। इस भूमि पर कई महान् राजाओं ने जन्म लिया और अपनी कर्म स्थली में अनेक किले, हवेलियां, बावड़ीयाँ, महल, मन्दिर आदि का निर्माण करवाया था। राजस्थान की राजधानी से 180 किलोमीटर दूर स्थित झुंझुनू को भी प्राचीन सांस्कृतिक खजाने के लिए जाना जाता है।

**1.मोदी और तिबरवाला हवेली**

यह एक प्राचीन महल है जिसमें शेखावाटी की कलाकृतियों को जानने का एक समृद्ध स्थल हैं।

**2.आठ हवेली**

आठ हवेली झुंझुनू जिले के अन्तर्गत नवलगढ़ किले के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। इन हवेलियों में शेखावाटी क्षेत्र के बेहतरीन भिति चित्र देखने को मिलते हैं।[24]

**3.अलसीसर व मलसीसर**

ये दोनों शहर शेखावाटी प्रान्त के उतर दिशा में झुंझुनू जिले में स्थित है। झुंझुनू से केवल 27 किलोमीटर दूरी पर स्थित अलसीसर शहर अपनी चित्रित हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर श्री लाल बहादुरमल की हवेली, तेजपाल झुंझुनूवाला की हवेली, लाख की हवेली, केतन हवेली प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। मलसीसर झुंझुनू से केवल 32 किलोमीटर दूर एक छोटा सा गाँव है जिसमें बनारसीदास बांका हवेली, सेढमल सरोगी हवेली प्रमुख रूप से दर्शनीय स्थल है।[25]

**4.मण्डावा**

शेखावाटी में विदेशी पर्यटकों के आवास एवं रात्री विश्राम की दृष्टि से अग्रणी माने जाने वाला झुंझुनू जिले का मण्डावा कस्बा जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर है। यह शहर अपने किलों व हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है। जिनमें प्रमुख रूप से हनुमान प्रसाद गोयनका हवेली, बिंसिधर हवेली, मुरमुरिया हवेली, लक्ष्मीनारायण लड़िया हवेली प्रसिद्ध हैं। इनकी दिवारों पर भिति चित्रों को उकेरा गया है जो लगभग 150 से 200 वर्ष पुराने भिति चित्र हैं।[26]

**5.नवलगढ़ की हवेलियां**

झुंझुनू जिले से नवलगढ़ शहर दक्षिण दिशा में स्थित है। यहां पर अधिक हवेलियां होने के कारण नवलगढ़ को राजस्थान का हवेलियों का नगर भी कहा जाता है। यहां पर प्रमुख रूप से भगतों की हवेली, छोटी हवेली,

---

[23] तारादत्त, गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की, पृ. 134

[24] जिला दर्शन, जिला प्रशासन तथा सूचना एवं जनसंपर्क कार्यालय, झुंझुनू, पृ. 12 वर्ष-2017

[25] उदयवीर शर्मा, अमोलकचंद जागिड़, वरदा शोध पत्रिका, सितम्बर-2001, पृ. 67

[26] तारादत्त, गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की, पृ. 20, व्यक्तिगत सर्वे, दिनांक 28.06.2019

परशुरामपुरीया हवेली, छाउछरिया हवेली, सेकसरिया हवेली, मोरारका हवेली, पोदार हवेली प्रमुख हैं। ये सभी हवेलियां दीवार पर उकेरे गये भिति चित्रों के लिए प्रसिद्ध हैं। नवलगढ़ में 100 से ज्यादा हवेलियां अपना शिल्प सौन्दर्य बिखेरे हुये हैं। नवलगढ़ की हवेलियां वर्तमान में भी अपने मालिकों की प्रगति को बताती हैं। इन हवेलियों के बारे में आज निम्न पंक्तियां कही जाती हैं-

**"सेठ बसे कलकता बम्बई, डिबरूगढ़, आसाम,**

**चाकर ठीड़ै बैठ्या बैठ्या काटै उम्र तमाम,**

**कुणा सूं मूजरा करै हवेल्यां, बरसा मिलै न राम?**

**बाटड़ली जोवै आवणा री गौखै बैठी शाम।"**

अर्थात् सेठ कलकता बम्बई डिबरूगढ़ और आसाम में बस गये तो हवेलियों की देख रेख का दायित्व उन पर रहा जिन्हे ताउम्र यहीं जिन्दगी गुजारनी है। भला सूनी और विशाल हवेलियों किस से मुजरा करे? हवेलियों के राम तो प्रवासी हो गये हैं और वर्षों से गांव नहीं लौटे हैं। एक अकेली शाम है जो हर दिन उनके लौटने की प्रतिक्षा में हवेलियों के चबुतरों पर बैठी रहती है अनमनी-सी बेबस और उदास।[27]

राजस्थान के शेखावाटी जनपद का प्रमुख स्थल झुंझुनू जिला पर्यटन की दृष्टि से एक समृद्ध जिला है। यहां अरावली पर्वत श्रृंखला की गोद में लोहार्गल और किरोड़ी जैसे सज्जल सुरम्य और सुदर्शनीय स्थल हैं तो नवलगढ़, मंडावा, महनसर, झुंझुनू, डूण्डलोद, पिलानी, बिसाऊ, मुकन्दगढ़, चूड़ी अजीतगढ़, बगड़ आदि कस्बों में सेठों की 150 से 250 वर्ष पुरानी हवेलियों में चिताकृषक, भितिचित्रों का वैभव भी देखने लायक है। झुंझुनू जिले में मण्डावा-मुकन्दगढ़, डूण्डलोद, महनसर, खेतड़ी, बिसाऊ आदि के किले और राजप्रासाद, अलसीसर-मलसीसर, झुंझुनू, परसामपुरा, उदयपुरवाटी, गांगियासर आदि स्थानों पर स्थित कलात्मक कुएं, बावड़ी व छतरियां, नरहड़, झुंझुनू, चिड़ावा, नवलगढ़, लोहार्गल, किरोड़ी, डाबड़ी, मण्डावा, टीब्बा-बसई आदि के भव्य धार्मिक स्थल जिले के गांवों और कस्बे में बने पुराने व कलात्मक जोहड़े व तालाब तथा होटल हैरिटेज परम्परा को प्रतिम्बित करते राजप्रासाद इन दिनों स्वदेशी व विदेशी सैलानियों की नजरों में आनन-फानन कैद होने वाले दर्शनीय स्थल हैं।[28]

***Corresponding Author***
*** Dr.Sajjan singh**
*Assistant Professor, SMD College, Singnor*
*Gillon ka bass,Bhorki, Gudhagorji, Jhunjhunu ,pin code-333032*
*Email -dr.ssgill4300@gmail.com, Mobile-9413533833*

[27] रतनलाल मिश्र, टैल्स ऑफ शेखावाटी, पृ. 17-18, तारादत्त, गाथा शेखावाटी की रत्नों वाली माटी की, पृ. 29

[28] उदयवीर शर्मा, अमोलकचंद जागिड़, वरदा शोध पत्रिका, सितम्बर-2001, पृ. 2